Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2023**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages. Any blank pages are indicated.

© UCLES 2023

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2023 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now
[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * हैलो संजू, कैसे हो? तुम्हारी ट्यूटर का फ़ोन आया था। उन्हें शाम को पाँच बजे अपने डॉक्टर के पास जाना है। वैसे ही अपनी सालाना जाँच के लिए। उन्होंने तुम्हें चार बजे बुलाया है। इसका मतलब है कि तुम्हारे पास आज स्कूल से घर आने का वक़्त नहीं होगा। सीधे ट्यूटर के पास चले जाना। किसी दोस्त की कार में लिफ़्ट मिल जाए तो ठीक है। वर्ना बस ले लेना। कोई दिक़्कत हो तो मुझे फ़ोन कर लेना। बॉय! **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिलाः मोहित, कॉलेज पत्रिका के अगले अंक की सामग्री जुटानी है!

पुरुषः अरे हाँ! किस का साक्षात्कार लें?

महिलाः अपने पुस्तकालय की अध्यक्ष कैसी रहेगी?

पुरुषः लेकिन आनंद का लेख तो पुस्तकालय पर ही है! माली भैय्या से बात कर लें तो?

महिलाः वाह! वह तो वाकई मज़ेदार रहेगा और आवरण पृष्ठ का क्या करें?

पुरुषः खेल दिवस की तस्वीरें बहुत सुंदर आई हैं।

महिला: पर खेल की तस्वीर तो अभी लगाई थी! नई प्रयोगशाला कैसी रहेगी?

पुरुष: ठीक है। उसी की तस्वीर लगाते हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 3

MALE: * सहारा के रेगिस्तान में एक लंबी दूरी की दौड़ का आयोजन किया जाता है जिसे रेत की मैराथन कहते हैं। उत्तरी अफ़्रीका के देश मोरोक्को में होने वाली इस सालाना दौड़ में भाग लेने वालों के सोने के लिए तंबुओं का प्रबंध दौड़ के आयोजक करते हैं। प्रतियोगियों को अपनी ज़रूरत का सारा सामान पीठ पर लादकर दौड़ना पड़ता है। सामान का वज़न 15 किलो से अधिक नहीं होना चाहिए। दौड़ के दौरान पीने के पानी का प्रबंध भी आयोजक ही करते हैं। धावक एमपी3 प्लेयर भी साथ लेकर आते हैं ताकि सुनसान रेगिस्तान में दौड़ते समय मन लगा रहे। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 4

MALE: * पुरुषः सुनो, आज शाम उस नए रेस्तराँ में चलते हैं!

महिलाः मन तो मेरा भी है। सुना है वहाँ कुछ नई क़िस्म का खाना मिलता है।

पुरुषः हाँ, बताते हैं कि इन्होंने कुछ नए पकवान बनाए हैं जिनमें भारतीय और चीनी खाने का मिश्रण है।

महिलाः अरे हाँ! आपके पिता जी भी तो ले गए थे इसी तरह के एक रेस्तराँ में!

पुरुषः हाँ, वहाँ हमने इतालवी और जापानी खाने के मिश्रण का स्वाद लिया था।

महिलाः ठीक है। मैं मंदिर आ जाती हूँ। वहाँ से पैदल चलेंगे।

पुरुषः मंदिर दूर पड़ेगा। झील पर आ जाओ।

महिलाः ठीक है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * आज के कार्यक्रम में हम ऐसी दो स्थानीय कंपनियों के बारे में जानेंगे जिन्होंने हाल में ही कारोबार शुरू किया और वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कारोबार के पुरस्कार के लिए चुनी गईं। इनमें से पहली कंपनी का नाम है 'प्रीतिभोज' जो निजी और सामाजिक आयोजनों के लिए खाने-पीने का प्रबंध करती है। प्रतियोगिता के निर्णायकों ने इस कंपनी के कारोबार की ख़ूब सराहना की। लेकिन पुरस्कार के लिए बाज़ी मारने में सफल रही कार शेयरिंग कंपनी 'साझा कार' जिसके तेज़ी से फैलते कारोबार ने शहर के प्रदूषण को कम करने में भी सहायता की है। **

[Pause 10 seconds]

© UCLES 2023

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: * महिलाः हैलो सर! मैंने पाठ्यक्रम पुस्तिका पढ़ ली।

पुरुषः ठीक है सुनीता। क्या फ़ैसला किया? कौन सा विषय चुना?

महिलाः सर, जनवरी तक तो मैं अर्थशास्त्र के लिए मन नहीं बना पा रही थी। लेकिन अब मुझे लगने लगा है कि मुझे इसी का स्नातक बनना चाहिए। मैं हमेशा कानून पढ़ने के बारे में सोचती थी, अपनी माँ की तरह। पर अब मेरा विचार बदल गया है।

पुरुषः ठीक है। मेरे विचार में तुम्हें अपने माता-पिता से सलाह करनी चाहिए। उसके बाद हम लोग फ़रवरी में मिलेंगे और आवेदन प्रक्रिया पर बात करेंगे।

महिलाः ठीक है सर! आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

FEMALE: **भारत के जाने-माने संगीतकार अनिल बिस्वास के एक संस्मरण को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।**

यह संस्मरण आपको दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * हमारे समाज में पहले मिल-बैठने की एक परंपरा थी। लोग साथ-साथ बैठते थे। बातें करते थे। साथ-साथ खाते-पीते थे। वह परंपरा अब धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है यानी महफ़िल की परंपरा, बाँग्ला में जिसे जल्सा कहते हैं। हमारा गाना-बजाना भी उसी तरीक़े से होता था। महफ़िल में बैठने से एक-दूसरे से भावनाओं का आदान-प्रदान भी संभव था।

हिंदुस्तानी संगीत का विकास ही भावनात्मक स्तर पर लोगों को आपस में जोड़ने और मन के उन गहरे भावों का संप्रेषण करने के लिए हुआ है जिन्हें भाषा के माध्यम से संप्रेषित नहीं किया जा सकता। लोग पूछते हैं, पहले के संगीत में और आज के संगीत में क्या फ़र्क आ गया है? मैं कहता हूँ, संगीत में कुछ फ़र्क नहीं आया, बस उसका स्वरूप बदल गया है।

हम पहले अपनी आत्मा को सामने रखकर गाते थे। भगवान को सामने रखकर गाते थे। लोग यहाँ तक कहते थे कि संगीत के माध्यम से आप ईश्वर को पा सकते हैं। यानी अगर ताल बँध जाए तो वहाँ तक पहुँचने का सोच सकते हैं। दूसरी तरफ आज का संगीत दैहिक हो गया है। सिर्फ शरीर नाचता है, मन नहीं नाचता।

संगीत के इस बदलते रूप में मैं फ़िल्मी दुनिया में अपने आप को अयोग्य समझने लगा हूँ। यही कारण है कि मैं वह दुनिया छोड़कर चला आया। क्योंकि आज जो संगीत रचा जा रहा है वह मुझसे नहीं हो सकता। हम लोग आम तौर से अमूर्त यानी शब्दहीन संगीत में गाते हैं। इसे शास्त्रीय संगीत कहते हैं। इसमें शब्द नहीं होते, सिर्फ़ शब्दों का भ्रम होता है।

मेरी ज़िंदगी संगीत के बजाय एक गीतकार के रूप में शुरू हुई। मुझे बड़े-बड़े साहित्यकारों का साथ मिला, जैसे सुमित्रानंदन पंत, नरेंद्र शर्मा और अमृतलाल नागर। मैं गाया भी करता था। लेकिन

© UCLES 2023

किसी को गाना सिखाते हुए एक ऐसी घटना हुई जिसके बाद मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब व्यावसायिक रूप में कुछ नहीं गाऊँगा, सिर्फ़ संगीत निर्देशन ही करूँगा। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

MALE: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान इसरो में काम करने वाले युवा इंजीनियर नीलेश हिरवे के साथ 'तरुण भारत' की संवाददाता साक्षी चौबे की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: साक्षीः * नीलेश, आप भारत की अंतरिक्ष विज्ञान संस्था इसरो में काम कर रहे हैं और

आपका बचपन मुंबई की एक चाल में बीता। बताइए कि चाल से अंतरिक्ष की यात्रा की शुरुआत कैसे और कहाँ से हुई?

नीलेशः साक्षी जी, कहानी की शुरुआत मुंबई की पवई चाल से हुई जहाँ मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालने वाले लगभग तीन हज़ार लोग रहते थे। चाल में पढ़ाई-लिखाई का माहौल कतई नहीं था। लेकिन मेरे पिता जी सरकारी प्राथमिक पाठशाला में पढ़ाते थे। उनका एक ही सपना था कि उनका बेटा चाल से निकलकर कहीं बेहतर जीवन गुज़ारे।

साक्षीः और आप क्या चाहते थे?

नीलेशः मुझे चाल के बच्चों की तरह धमा-चौकड़ी मचाना पसंद नहीं था। एक ही कमरे का घर था। स्कूल से लौटने के बाद मैं हमारे कमरे के एक कोने में रखे पलंग पर बैठ कर स्कूल के काम में लग जाता। मैं इंजीनियर बनना चाहता था। दसवीं करने के बाद मैंने पापा से कहा कि मेरी कोचिंग करवा दीजिए। पर कोचिंग में मोटी फ़ीस लगती थी। वे मुझे एक सलाहकार के पास ले गए। उसने कुछ देर बात करने के बाद कह दिया कि मुझ में इंजीनियर बनने की काबिलियत नहीं है। मुझे उसकी बात पर बहुत रोना आया। लेकिन मैंने गाँठ बाँध ली कि अब तो इंजीनियर बनकर ही रहूँगा। चाहे जो हो।

साक्षीः इस पर आपके पापा ने क्या कहा?

नीलेशः उन्होंने समझाने की कोशिश की लेकिन मैं पढ़ाई में जुट गया और बारहवीं के बाद मुझे एक तकनीकी कॉलेज में इंजीनियरी के डिप्लोमा के लिए दाख़िला मिल गया। पर वहाँ जाते ही एक नई मुसीबत खड़ी हो गई। एक तो इंजीनियरी की सारी क़िताबें अंग्रेज़ी में थीं और ऊपर से प्राध्यापक लोग भी अंग्रेज़ी में ही पढ़ाते थे। मेरी पढ़ाई मराठी माध्यम से हुई थी इसलिए मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती थी।

साक्षीः तो इस मुसीबत का हल कैसे निकाला?

नीलेशः एक प्राध्यापक थे जो हमारी चाल के पास ही रहते थे। मैं उनके पास गया। उन्होंने कहा घबराओ नहीं शब्दकोश की मदद लो और फिर भी समझ न आए तो बेहिचक मेरे पास आओ। मैं मदद करूँगा। उसके बाद दिन-रात लग कर पढ़ाई की। नौकरियों के बुलावे भी आए लेकिन मैंने स्नातक बनने के लिए नवी मुंबई के इंदिरा गाँधी कॉलेज में दाख़िला ले लिया। दोस्त और घर वाले हँसते थे कि यह लड़का नौकरी छोड़ किताबों में खोया रहना चाहता है। लेकिन मेरे माता-पिता ने मुझे सपने देखने की आज़ादी दे रखी थी और मैं अपने सपने के पीछे दौड़ रहा था।

साक्षीः और क्या था वह सपना? इंजीनियर तो आप बन चुके थे।

नीलेशः इंजीनियरी का सपना किसी बड़े राष्ट्रीय संस्थान में काम करने के सपने में बदल गया था। इंजीनियर बनने के बाद मैंने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेना और बड़े-बड़े संस्थानों में आवेदन करना शुरू किया। हैदराबाद जाकर थोड़ी कोचिंग भी ली। अंत में जाकर इसरो में आवेदन किया और वहाँ मेरा चयन भी हो गया। जब लोगों ने मेरी माँ को इसरो के बारे में बताया तो वे फूली न समाईं और मुझे गले से लगा लिया। इस तरह चाल का एक बच्चा अंतरिक्ष तक जा पहुँचा।

साक्षीः नीलेश, आपकी यात्रा की कहानी दिलचस्प भी है और प्रेरणादायक भी। सुनाने के लिए धन्यवाद।

नीलेशः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: औद्योगिक विकास पर दो मित्रों की बहस को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बहस आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * सकल घरेलू उत्पाद मे निरंतर वृद्धि को ही विकास मानकर पूरी दुनिया में औद्योगीकरण और व्यापार को बढ़ावा दिया गया। जनता के लिये ज़रूरत के अनुसार उत्पादन की जगह अति उत्पादन करके बाज़ारों को भर दिया गया। यह कहा गया था कि औद्योगीकरण में ही दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान है। लेकिन जो कुछ हुआ उसने यह सिद्ध किया कि औद्योगीकरण समाधान नहीं बल्कि ख़ुद एक समस्या है। पर्याप्त उत्पादन के बावजूद भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएँ दुनिया की आधी आबादी को नसीब नहीं हैं। अधिकाधिक मुनाफ़ा कमाने के लिये मज़दूरों का शोषण और उद्योगों को सस्ती कृषि उपज उपलब्ध कराने के लिये किसानों का शोषण किया जाता है, जो आर्थिक विषमता का एक प्रमुख कारण है।

© UCLES 2023

MALE: आर्थिक विषमता वाली बात सही है। लेकिन दुनिया में इस समय ऐसा कोई देश नहीं है जिसने औद्योगिक विकास की जगह प्रकृति पर आधारित विकास के मार्ग पर चलकर उन्नति की हो। मंगोलिया, सूडान और माली जैसे जो देश औद्योगिक विकास और विश्व व्यापार की दौड़ में पीछे रहे उनकी दशा औद्योगिक विकास में आगे रहने वाले देशों की तुलना में बहुत ही ख़राब है। अमरीका, यूरोप और भारत में आर्थिक विषमता भले बढ़ी हो लेकिन उसका कारण सभी का पिछड़े रह जाना नहीं बल्कि कुछ का बहुत आगे निकल जाना और कुछ का बहुत पीछे रह जाना है। इसका सारा दोष समाजों और सरकारों को दिया जाना चाहिए जो सामाजिक न्याय की नीतियों पर चलने और सबको समान अवसर देने में नाकाम रहे हैं।

FEMALE: औद्योगीकरण के लिये जल, जंगल, ज़मीन, समुद्र, खनिज और खनिज तेल जैसे प्राकृतिक संसाधनों की ज़रूरत होती है और ये संसाधन उन पर निर्भर आदिवासियों और किसानों से छीनकर ही प्राप्त किये जा सकते हैं। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में मज़दूरों को रोज़गार उपलब्ध कराने के लिये कई गुणा अधिक किसानों, दस्तकारों और कामगारों के रोज़गार छीने जाते हैं। जीविका का आधार छीने जाने और मनुष्य के रूप में उपलब्ध जीवित ऊर्जा के बदले मशीनीकरण के बढ़ने से बेरोज़गारी बढ़ती है। अब कृत्रिम बुद्धि से चलने वाली चतुर मशीनों के विकास से और जेनेटिक इंजीनियरी के प्रवेश से रोबोट और क्लोन ही सारे काम करने लगेंगे और बेरोज़गारी का संकट और भी बढ़ेगा।

MALE: प्राकृतिक संसाधनों की ज़रूरत तो हर तरह के विकास के लिए होती है। प्रकृति के साथ जीवन बिताने की बातें करना आसान है पर एक बार ज़रा औद्योगिक विकास से मिली सारी सुख-सुविधाओं के बिना जी कर तो दिखाइए! रही मशीनीकरण से बेरोज़गारी बढ़ने की बात। तो हम सब जानते हैं कि कारख़ाने बनने से रोज़गार घटे नहीं बढ़े हैं। खेती और दस्तकारी करने वाले करोड़ों लोगों को उद्योगों में काम मिला। जब चतुर मशीनें बनेंगी तो उन्हें चलाने और बनाने वाले प्रशिक्षित लोगों की ज़रूरत पड़ने लगेगी। रोज़गार कम नहीं होंगे। उनके लिए दक्षता का स्तर बढ़ता जाएगा।

FEMALE: लेकिन औद्योगीकरण की अंधी दौड़ ने सबसे बड़ा नुक़सान हमारे पर्यावरण का किया है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से वैश्विक तामपान में वृद्धि और जलवायु में परिवर्तन लाकर औद्योगीकरण ने हमारी पृथ्वी के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। बदलते मौसमों के कारण खेती भी प्रभावित हो रही है जिससे खाद्य-सुरक्षा का संकट पैदा हो सकता है। पूरी दुनिया प्रदूषण के संकट और जल-संकट से जूझ रही है। विडंबना की बात यह है कि लोग और उनकी सरकारें यह सब जानती हैं। फिर भी पर्यावरण को बचाने के लिए उद्योग संगठनों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ताक़त के सामने लाचार साबित हो रही हैं।

MALE: यह सही है कि औद्योगिक विकास जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के विनाश का प्रमुख कारण है। फिर भी उसकी दिशा के लिए हम सब ज़िम्मेदार हैं। जिस विज्ञान से हमें जलवायु में हो रहे परिवर्तन का और पर्यावरण को हो रही क्षति का पता चला है उसी विज्ञान ने पानी, पवन और सूर्य से मिलने वाली अक्षय ऊर्जा के संग्रह और प्रयोग के साधन दिए हैं ताकि हम खनिज तेलों और कोयले का प्रयोग छोड़ सकें। अब यदि हम जान-बूझ कर तेल और कोयला जलाते रहें और अक्षय ऊर्जा के विकल्प नहीं अपनाएँ तो इसमें दोष किसका है? आप कह सकते हैं कि औद्योगिक विकास से जुड़ी ताक़तें हमें साफ़ विकल्पों की तरफ़ जाने से रोकती हैं। लेकिन उनके रोके जाने पर रुकना या न रुकना तो हमारे अपने हाथों में है! **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 की इस बहस को अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।
This is the end of the examination.

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2023